नाटक बनाते हैं शिक्षण को मजेदार

– रीना

नाटक के माध्यम से पाठ्यपुस्तकों के सीधे इस्तेमाल के बिना पाठ्यपुस्तकों के पाठों को जीवंत बनाया जा सकता है और धीरे-धीरे पाठ्यपुस्तकों के प्रति रुचि पैदा की जा सकती है। इसके साथ ही नाटक के माध्यम से बच्चों में समझ, संवेदना और कौशलों का विकास सहज भाव से हो सकता है।

मार्च 2020 से कोरोना महामारी के चलते परिस्थितियां बिल्कुल बदली हुई हैं। इस अंतराल के दौरान बच्चों के सीखने के स्तर में काफी गिरावट नजर आती है। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के द्वारा की गयी लर्निंग लॉस स्टडी में बताया गया है कि इस दौरान 80 प्रतिशत बच्चों का सीखने का स्तर प्रभावित हुआ हैं। विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर यह प्रभाव अधिक नजर आता है क्योंकि ऑनलाइन माध्यम के द्वारा छोटे बच्चे कम जुड़ पाते हैं।

स्कूल खुलने के बाद इस कमी को दूर करने की चुनौती हम सभी शिक्षकों के सामने होगी। अगर हम केवल पाठ्यपुस्तकों के द्वारा ही उनके सीखने को सुनश्चित करेंगे तो शायद यह बच्चों के लिए अधिक कारगर सिद्ध नहीं हो पाएगा। यानी इस कोरोना काल में हुए लर्निंग लॉस की भरपाई केवल पाठयपुस्तकों के द्वारा संभव नहीं हो पाएगी। पढ़ने के प्रति रुचि पैदा करना, शायद आज के इस विकट समय में सबसे बड़ी जरूरत है। ऐसी परिस्थिति में नाटक या रंगमंच ऐसा माध्यम हो सकता है जो बच्चों में पढ़ने–लिखने के प्रति रुचि पैदा कर सकता है। आइए इस दृष्टिकोण से भाषा शिक्षण में नाटक की भूमिका को समझने का प्रयास करते हैं।

साहित्य की अन्य विधाओं की तरह नाटक एवं एकांकी को भी पाठ्यपुस्तकों में स्थान दिया जाता रहा है। नाटक और एकांकी का उद्देश्य यह भी होगा कि बच्चे इन नाटकों का अभिनय भी करें। बच्चों के शिक्षण के लिए धीरे–धीरे इस विधा के महत्व को समझा जाने लगा। नाटक की उपादेयता इसलिए भी बनी है क्योंकि जब हम नाटक खेलते हैं तो लोगों के जीवन से सीधे–सीधे जुड़ते हैं। जब हम नाटक में अभिनय करते हैं तो हमें पात्रों के जीवन की परिस्थितियों, उनके सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन, परंपराओं और मूल्यों को समझना पड़ता है।

कहानी, निबंध, कविता एवं साहित्य की अन्य विधाओं से नाटक भिन्न है। अन्य विधाओं में पढ़ना, लिखना एवं सुनना शामिल हो सकता है। लेकिन नाटक में उपरोक्त के साथ–साथ अभिनय भी शामिल है। इस तरह से इसमें बताने या कहने की बजाय दिखाने पर जोर होता है। बर्तोल्त ब्रेख्त भी यही कहते हैं कि 'दिखाओ जो कुछ दिखाना है।'

शिक्षण को बच्चे के पूर्व ज्ञान से जोड़ने की जरूरत भी रेखांकित की जाती है। नाटक के माध्यम से यह काम बखूबी किया जा सकता है क्योंकि बच्चे खेल–खेल में खूब नाटक करते रहते हैं, जैसे कभी किसी बड़े की नकल उतारना या किसी जानवर की आवाज निकालते हुए एक–दूसरे को डरा देना आदि। इस तरह से बच्चों के बीच में नाटक की शुरुआत के लिए, ऐसे ही छोटे–छोटे प्रसंगों पर अभिनय करवाया जा सकता है। इस प्रक्रिया में बच्चे के पूर्व ज्ञान और संदर्भ से विषय–वस्तु को आसानी से जोड़ा जा सकता हैं। बच्चे अपने बचपन में खेलते हुए विभिन्न तरह की भूमिकाएं निभाते रहते हैं। इस प्रक्रिया में वे हाव–भाव के साथ ही मानसिक स्तर पर भी सक्रिय होते हैं। मानसिक सक्रियता का आशय है कि वे भाषा का भी बखूबी इस्तेमाल करते हैं। हम जानते हैं कि भाषा के माध्यम से ही बच्चे की अवधारणाओं का निर्माण होता है। जब बच्चे नाटक करते हैं तो उन्हें सबसे पहले शब्दों के अर्थ को आत्मसात करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में शब्दों से शुरू करके पूरे वाक्यों को समझने का काम होता है। जब बच्चे कोई वाक्य बोलते हैं तो उन्हें अलग–अलग संदर्भ के अनुरूप उस वाक्य के शब्दों में किस शब्द पर अतिरिक्त बल देना है यह समझना पड़ता है। इस प्रक्रिया में वे वाक्य को व्यवस्थित करना सीखते हैं। इसके साथ वे यह भी सीख रहे होते हैं कि कहां अल्पविराम लेना है, कहां अर्ध विराम लेना है और कहां पूर्ण विराम लेना है। इस तरह से रंगमंच की गतिविधियों से बच्चों में व्याकरण की समझ अनायास ही विकसित होती रहती है।

नाटक के माध्यम से की जानी वाली गतिविधियां उत्साह वर्धक होती हैं क्योंकि इन गतिविधियों का अंतिम लक्ष्य विषय की प्रस्तुति होता है। विषय प्रस्तुति के साथ बाल कलाकार उत्साह से भर उठते हैं। उनके लिए यह सकारात्मक उद्दीपक का काम करता है। जो उनके सीखने की निरंतरता को बेहतर से बेहतर करता जाता है और बच्चों की सेल्फ लर्निंग होती रहती है।

बहुत से बच्चे ऐसे होते हैं जो कक्षा में खुद को अभिव्यक्त नहीं कर पाते। नाटक की गतिविधियों में उन्हें छोटी–छोटी भूमिकाओं में शामिल करते हुए उनकी भागीदारी की शुरुआत की जा सकती है। इस प्रक्रिया में बच्चे धीरे–धीरे खुद को अभिव्यक्त करना शुरू कर देते हैं। इस तरह से उनमें आत्मविश्वास का विकास होता है।

नाटक के माध्यम से बच्चे–बच्चियों में सामूहिकता का विकास भी होता है। नाटक पर अभिनय के लिए सभी कलाकारों को समूह में काम करना पड़ता है। इस दौरान उन्हें एक–दूसरे की बातें सुननी और समझनी पड़ती है। एक–दूसरे की सीमाओं और खूबियों को समझने का अवसर मिलता है। नाटक की तैयारी, मंच की साज–सज्जा, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था भी सामूहिक तौर से ही संभव हो पाती है, इसलिए परस्पर सहयोग एवं निर्भरता रंगमंच की पूर्व शर्त है। किसी भी कलाकार को अपनी गतिविधि को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उस गतिविधि में शामिल प्रत्येक बच्चे पर निर्भर रहना पड़ता है। इसलिए उन्हें एक–दूसरे के सहयोग की उपयोगिता का गहराई से अहसास होता रहता है।

नाटक की गतिविधि कक्षा की नीरसता को तोड़ने का भी काम करती है। बहुत बार कक्षा में एक ही तरीके से शिक्षण चलता रहता है। जिसमें बच्चे की भागीदारी के भी अवसर कम ही होते हैं। जैसे यदि शिक्षक कहानी पढ़ा रहा होता है तो बच्चे मूक रहकर केवल श्रोता की भूमिका में होते हैं। जबकि रंगमंच की गतिविधियों का इस्तेमाल करते हुए वे कहानी के पात्रों का अभिनय करते हुए कहानी को कक्षा में प्रस्तुत कर सकते हैं जिससे कक्षा में जीवंत किया जा सकता है। इसी तरह से बहुत सी कविताओं में भी हाव–भाव का इस्तेमाल करते हुए जीवंत दृश्य कक्षा में उपस्थित किए जा सकते हैं। आवाज के उतार–चढ़ाव के माध्यम से कहानी और कविता के शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

ये गतिविधियां केवल हिंदी भाषा शिक्षण के लिए ही उपयोगी नहीं है। अन्य विषयों के शिक्षण के लिए भी इनका बखूबी इस्तेमाल किया जा सकता है। जैसे जीव विज्ञान के अंतर्गत जीव की उत्पत्ति को समझाने के लिए हम नाटक की गतिविधि का इस्तेमाल करते हुए इसे बखूबी समझा सकते हैं। इसी तरह से इतिहास का शिक्षण करने के लिए हम इतिहास की किसी घटना या ऐतिहासिक व्यक्तित्व का सजीव चित्रण करने के लिए नाटक की गतिविधियों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

नाटक के माध्यम से हाव–भाव के खूब अवसर मिलते हैं जिसके दौरान बच्चों में कौशलों के विकास की शुरुआत हो जाती है। अभिनय के माध्यम से उन्हें विभिन्न

भाव–भंगिमाओं को दर्शाना होता है। इसके अतिरिक्त संवाद के माध्यम से बच्चे मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल को विकसित करते रहते हैं।

मूल्य एवं संवेदनाओं के विकास के लिए भी नाटक का इस्तेमाल किया जाता रहा है। जब बच्चे किसी गरीब, दलित या वंचित समाज के पात्रों की त्रासदी को रंगमंच के माध्यम से दर्शाते हैं तो उन्हें उनके जीवन की विसंगतियों को महसूस करने की जरूरत पड़ती है। इस दौरान उन पात्रों के साथ वे संवेदना के स्तर पर भी जुड़ते हैं। इस तरह से उनमें मानवीयता, समानता एवं बंधुत्व जैसे मूल्यों का विकास होता है।

नाटक के माध्यम से पाठ्यपुस्तकों के सीधे इस्तेमाल के बिना पाठ्यपुस्तकों के पाठों को जीवंत बनाया जा सकता है और धीरे–धीरे पाठ्यपुस्तकों के प्रति रुचि पैदा की जा सकती है। इसके साथ ही नाटक के माध्यम से बच्चों में समझ, संवेदना और कौशलों का विकास सहज भाव से हो सकता है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि समझ, संवेदना और कौशलों का विकास करना भी शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इस तरह शिक्षा के उद्देश्यों को हासिल करने में नाटक की विशेष भूमिका को देखा जा सकता है।

नाटक की गतिविधियों की तमाम खूबियों के बावजूद कुछ चुनौतियां भी हैं। हम यह मानते हैं कि नाटक के माध्यम से बच्चों में संवेदना का विकास किया जा सकता है जबकि रंगमंच से जुड़े कई लोगों का मानना है कि अभिनय केवल अभिनीत करने तक सीमित है, इसका जीवन से कोई सरोकार नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि इसे केवल एक मत की तरह ही समझना चाहिए। हमें बच्चों के बीच संवेदनाओं के विकास की संभावनाओं को तलाशने की जरूरत है। कई विषय ऐसे भी हैं जिन्हें रंगमंच के माध्यम से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। जैसे यदि हमें विज्ञान के प्रयोग करने हैं तो उन्हें विज्ञान प्रयोगशाला में खुद करके ही देखना पड़ेगा, उन्हें अभिनय के माध्यम से नहीं समझाया जा सकता है। लेकिन वैज्ञानिक अवधारणाओं के बारे में जरूर रंगमंच के जरिये बताया जा सकता है।

(लेखिका, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड से जुड़ी हैं।)

तोड़ो नहीं, जोड़ो

- यशपाल जैन

अंगुलिमाल नाम का एक बहुत खतरनाक डाकू था। वह लोगों को मारकर उनकी उँगलियाँ काट लेता था और उनकी माला पहनता था। इसी से उसका यह नाम पड़ा था। आदमियों को लूट लेना, उनकी जान ले लेना, उसके बाएँ हाथ का खेल था। लोग उससे डरते थे। उसका नाम सुनते ही उनके प्राण सूख जाते थे।

संयोग से एक बार भगवान बुद्ध उपदेश देते हुए उधर आ निकले। लोगों ने उनसे प्रार्थना की कि वह वहाँ से चले जाएँ। अंगुलिमाल ऐसा डाकू है, जो किसी को भी नहीं छोड़ता।

बुद्ध ने लोगों की बात सुनी, पर उन्होंने अपना इरादा नहीं बदला। वह बेधड़क वहाँ घूमने लगे।

जब अंगुलिमाल को इसका पता चला तो वह झुँझलाकर बुद्ध के पास आया। वह उन्हें मार डालना चाहता था, लेकिन जब उसने बुद्ध को मुस्कराकर प्यार से उसका स्वागत करते देखा तो उसका पत्थर जैसा दिल कुछ मुलायम हो गया।

बुद्ध ने उससे कहा, 'क्यों भाई, सामने के पेड़ से चार पत्ते तोड़ लाओगे?'

अंगुलिमाल के लिए यह काम क्या मुश्किल था! वह दौड़ कर गया और जरा-सी देर में पत्ते तोड़कर ले आया।

'बुद्ध ने कहा, अब एक काम करो। जहाँ से इन पत्तों को तोड़कर लाए हो, वहीं इन्हें लगा आओ।'

अंगुलिमाल बोला, 'यह कैसे हो सकता है?'

बुद्ध ने कहा, 'भैया! जब जानते हो कि टूटा जुड़ता नहीं तो फिर तोड़ने का काम क्यों करते हो?'

इतना सुनते ही अंगुलिमाल को बोध हो गया और वह उस दिन से बुद्ध की शरण में आ गया।

(हिंदी समय से साभार)